रामानुजाचार्य के अनुसार 'ब्रह्म' या 'ईश्वर'

रामानुज भी शंकर के समान अद्वैत मत के पोषक हैं। अर्थात् वे भी मानते हैं कि एक ही सत्ता विश्व के मूल में है, तथा यह सत्ता ब्रह्म या ईश्वर है। किंतु यहाँ पर रामानुज का ब्रह्म विशिष्ट प्रकार का है।

शंकर ने केवल ब्रह्म को पारमार्थिक दृष्टिकोण से वास्तविक बताया है तथा ईश्वर को व्यावहारिक दृष्टिकोण से सत्य कहा है। इसे पारमार्थिक दृष्टिकोण से सत्य या वास्तविक नहीं कहा जा सकता। शंकर के अनुसार जहाँ ब्रह्म निर्गुण, निराकार एवं व्यक्तित्वहीन है, अनिर्वचनीय और अज्ञेय है, वहीं रामानुज के अनुसार ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न है। परब्रह्म रामानुज के अनुसार ब्रह्म ही है और यही ईश्वर है।

ब्रह्म शब्द का अर्थ :→ रामानुज कहते हैं 'ब्रह्म' शब्द से तात्पर्य 'बृहत्व' से है, जो ऐसे पुरुष की ओर निर्दिष्ट करता है, जो स्वभाव से ही सभी अशुभ गुणों से रहित है एवं सभी शुभ गुणों का स्वामी है। यही ईश्वर है।

शंकर पारमार्थिक निर्गुण-ब्रह्म को परम सत्य कहते हैं। यहाँ रामानुज का कहना है कि, हर तरह से कोई अलंकृत व सुन्दर हो किंतु निष्प्राण हो, तो जैसा वह निष्प्रयोजन होता है वैसा ही शंकर का निर्गुण-निराकार अज्ञेय ब्रह्म है। हम ऐसे निष्ठुर एवं निर्मम ब्रह्म को लेकर क्या करेंगे जो हमारे दुःख दर्द से विचलित न हो, जिस तक हमारी आहें न पहुँचे तथा जो हमारी प्रार्थना न सुन सके?

रामानुज भी अद्वैतवादी ही हैं; क्योंकि उनके अनुसार भी सब कुछ ब्रह्म या ईश्वर है। किंतु उनका सिद्धांत एक

विशिष्ट कोटि का अद्वैतवाद है, क्योंकि इसमें जीवों तथा भौतिक जगत की वास्तविकता का भी समर्थन किया गया है। उनके अनुसार सर्वोच्च सत्ता ईश्वर है, जो सभी वांछनीय गुणों से सम्पन्न है। वह शुद्ध ज्ञान के स्वरूप वाला नहीं है बल्कि ज्ञान उसका एक गुण है। वह सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापक एवं सर्वकालिक है। जो कोई भी सत्ताशाली वस्तु है, वह ब्रह्म या ईश्वर में अंतर्भूत है। इसलिए विशिष्ट द्वैतवाद ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे स्वतंत्र तत्व को नहीं मानता। लेकिन इस एकता के भीतर भी अनेकता के ऐसे तत्व स्वतरूप से विद्यमान हैं, जो ईश्वर के 'कार्य' अथवा 'प्रकार' होते हुए भी सर्वथा वास्तविक हैं, न कि मायिक। ये तत्व अनेक प्रकारों और कोटियों की आत्माएँ (चित् तत्व) और सभी प्रकार के भूत (अचित् तत्व) हैं। ये दोनों तत्व मिलकर ईश्वर के रूप में कल्पित किए गए हैं, जिनका ईश्वर के साथ वैसा ही निर्भरता का सम्बन्ध है, जैसा कि एक प्राणी के भौतिक शरीर का उसकी आत्मा के साथ। भूत और आत्माएँ दोनों शाश्वत रूप से ईश्वर में विद्यमान हैं; उनका न कभी पूरी तरह प्रारम्भ हुआ था और न कभी पूरी तरह अंत होगा।

रामानुज के अनुसार ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न है। वह नित्य, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, असीम, अनंत एवं अमर है। साथ ही वह व्यक्तित्ववान भी है। उसकी देह (शरीर) षडैश्वर्यों से अर्थात् अनंत ज्ञान, असीम शक्ति, अखण्ड प्रेम, वीर्य, यश तथा श्री से परिपूर्ण है। यह विश्वव्यापी और विश्वातीत दोनों है। इस रूप में रामानुज सच्चे ईश्वरवादी हैं।

ईश्वर की विशेषताएँ :→ रामानुज के अनुसार ईश्वर की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1)- ईश्वर या ब्रह्म परम सत्ता है। ईश्वर एक ऐसा द्रव्य है, जिसमें चित् और अचित् दो अंश विद्यमान हैं। ये दोनों अपनी सत्ता के लिए ईश्वर पर आश्रित हैं।

(2)- ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण एवं सगुण है। सभी गुणों से युक्त है, अंतर्यामी है तथा जीवों को उनके कर्मों के अनुसार सुख-दुःख प्रदान करता है।

(3)- वेदांत दर्शन में तीन प्रकार के भेदों का उल्लेख मिलता है—
(i). स्वगत भेद - जैसे, मनुष्य और उसके अवयवों का भेद।
(ii). सजातीय भेद - जैसे, एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से भेद।
(iii). विजातीय भेद - एक मनुष्य का एक बैल से भेद।
शंकर ने इनमें से किसी भी भेद को स्वीकार नहीं किया है, किंतु रामानुज ब्रह्म या ईश्वर में 'स्वगत भेद' मानते हैं। इसका कारण यह है कि ब्रह्म में चित् और अचित् एक-दूसरे से भिन्न हैं।

(4)- ईश्वर सभी परिवर्तनों का संचालक है। ईश्वर सृष्टि का उपादान और निमित्त कारण दोनों है। जिस प्रकार मकड़ा अपने ही अन्दर से लासा निकालकर जाल बुन लेता है, उसी प्रकार ईश्वर भी अपने ही तत्वों से सृष्टिकार्य करता है।

(5)- सृष्टि या जगत् के दृष्टिकोण से ईश्वर कार्य और कारण के रूप में समझा जाता है। रामानुज के अनुसार, जब ब्रह्म सूक्ष्म रूप में प्रकट होता है तो वह 'कार्य ब्रह्म' है तथा जब वह प्रलय होने पर पुनः अपने सूक्ष्म रूप अर्थात् शुद्ध चित् व अचित् अंगों से युक्त हो जाता है तो यह 'कारण-ब्रह्म' कहलाता है। इस प्रकार ईश्वर प्रलय एवं सृष्टि से स्वयं जरा भी प्रभावित नहीं होता है।

(6)- ईश्वर भक्ति का केन्द्र है। वह हमारा उपास्य है; इसलिए ईश्वर तक पहुँचने के लिए भक्ति को सर्वश्रेष्ठ साधन कहते हैं। वैसे तो ईश्वर एक ही है, किंतु भक्तों की मुक्ति के लिए अपने को पाँच (5) रूपों में व्यक्त करता है -

(i)- पररूप → यह वैकुण्ठवासी भगवान वासुदेव का रूप है। यह अपरिणामी रूप है।

(ii)- व्यूह → अपने इस रूप को सृष्टि की उत्पत्ति, संचालन व संहार के लिए ईश्वर कुछ व्यूहों में व्यक्त करता है, ये व्यूह हैं - संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध। ये तीनों ही क्रमशः सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवं संहार करने वाले हैं।

(iii)- विभव → विशेष कार्य हेतु अवतार रूप लेकर ईश्वर का धरती पर प्रकट होना, विभव रूप है।

(iv)- अन्तर्यामी → इस रूप में वह जीवों के अन्तः करण में प्रविष्ट रहता है।

(v)- अर्चावतार → कभी-कभी ईश्वर भक्त की रुचि के अनुसार मूर्तियों में भी प्रकट होता है। यह उसका अर्चावतार है।

(7)- ईश्वर कर्मफल-दाता है, क्योंकि जड़ होने के कारण कर्म अपना फल स्वयं नहीं दे सकता।

(8)- रामानुज के अनुसार जगत ईश्वर का बाह्य शरीर है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि, ब्रह्म ही ईश्वर है। ईश्वर उपासना का विषय है। सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञ, सर्वदयालु है। इसमें क्षमा, दया, सहानुभूति, सौंदर्य और लावण्य, माधुर्य और गांभीर्य आदि गुणों की भी भरमार है। यह ज्ञान, दया एवं प्रेम की खान है। इस प्रकार, सभी सर्वोत्तम गुणों से युक्त ईश्वर भक्तों का प्रबल सहायक है, साथ ही यह धार्मिक भावना को पूर्ण संतुष्टि प्रदान करता है। इस प्रकार से रामानुज के अनुसार ब्रह्म एवं ईश्वर में कोई भेद नहीं है। दोनों एक ही सत्ता के दो नाम हैं। मोक्षावस्था में आत्मा ब्रह्म नहीं, बल्कि 'ब्रह्म के समान' बन जाती है।

---x---